शोध संचयन

Half yearly, Bilingual (हिन्दी & English)
ISSN 0975 1254
RNI No.- DELBIL/2010/31292

Vol. 5, Issue 1, 15 Jan, 2014

**An Internationally Indexed Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research**

CHIEF EDITOR :
Dr. Yogendra Pratap Singh

EDITOR :
Dr. Sunita Singh

ASSOCIATE EDITORS :

Dr. Pradeep Kumar Rao
Dr. Amit Kumar Dwivedi

---

www.shodh.net

शोध संचयन

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर केन्द्रित अर्द्धवार्षिक शोध जर्नल

Vol. 5, Issue 1, 15 Jan, 2014

प्रकाशकीय कार्यालय :

B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट,
गगन विहार एक्सटेंशन, दिल्ली, 51
E-mail : shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net
URL : www.shodh.net

संपादकीय पत्र व्यवहार :

डॉ० सुनीता सिंह, संपादक
409, शांतिवन अपार्टमेन्ट
2A/244A, आजाद नगर कानपुर- 208002
सम्पर्क : +919415050808

SUBSCRIPTION FEE OF JOURNAL

Individual :

	One Year	ThreeYear	Five Year	Life*
Rs.	Not Available	800	1400	3000
US$	15	30	60	200

Institutional :

	One Year	ThreeYear	Five Year	Life*
Rs.	400	1100	1800	4000
US$	25	50	100	300

Bank Draft or Crossed Cheque (CBSB Branches for out station cheque) accepted in Favour of "**Shodh Sanchyan**" payable at **Kanpur**. Overseas subscribers can subscribe by electronic transfer. For detail visit **www.shodh.net.** Excluding Postage.

*Subscription fee may be revised according to Editorial Board Decision. Life subscription is for ten years or servival of the journal, which is less. Postage charge excluded.

मूल्य : रु0 150/-

नोट : प्रकाशित आलेखों के विचारों से सम्पादक की सहमति अनिवार्य नही है। समस्त वाद क्षेत्र कानपुर होगा।

संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ0 सुनीता सिंह द्वारा शिवा प्रिंटिंग वर्क्स, A-21/11 नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II नई दिल्ली, 98 से मुद्रित कराकर B-9, द्वितीय तल, गगन अपार्टमेंट, गगन बिहार एक्सटेंसन, दिल्ली–51 से प्रकाशित

लेखकों से अनुरोध

शोध संचयन सामाजिक विषय एवं मानविकी का अर्द्धवार्षिक शोध-जर्नल है जिसमें उपरोक्त विषयों से संबंधित सभी उपविषयों के मौलिक शोध-पत्र, शोध समीक्षा, विचार, लेखों आदि का प्रकाशन किया जाता है। शोधकर्ता हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में अपने शोध पत्र भेज सकते है।

शोध पत्र भेजते समय कृपया निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें:-

1. शोध-पत्र अधिकतम 4000-5000 शब्दों तक में हो तथा 150 शब्दों का सार संक्षेप एवं विषय संकेतक (Key Words) भी प्रेषित करें।
2. संदर्भ ग्रन्थ सूची का उल्लेख अवश्य करें। संदर्भ ग्रन्थ सूची में लेखक का उपनाम, मुख्य नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन का वर्ष एवं पृष्ठ संख्या अंकित होना चाहिए। पत्रिका के संदर्भ में लेख का शीर्षक, पत्रिका का नाम, अंक, पृष्ठ क्रम एवं प्रकाशन वर्ष दें।
3. शोध-पत्र A4 साइज के कागज पर कम्प्यूटर से एक तरफ मुद्रित हो।
4. शोध-पत्र एम.एस. वर्ड अथवा पेज-मेकर पर हिन्दी में Krutidev 10 के Font size 12 तथा अंग्रेजी में Times New Roman में Font size 10 में टाइप करवाकर भेजें।
5. ई-मेल द्वारा प्रपत्र भेजने पर भी आलेख **तीन प्रतियों में (Hard Copy)** तथा **सीडी में** अवश्य भेजें। जिससे प्रूफ रीडिंग सम्बन्धी कमियों को दूर किया जा सके।
6. शोध-पत्रों की स्वीकृति एवं अस्वीकृति का अन्तिम निर्णय सम्बन्धित विषय के दो विशेषज्ञों की राय से सम्पादक मण्डल द्वारा किया जाता है। इस सम्बन्ध में अन्तिम अधिकार प्रधान सम्पादक को प्राप्त है जो सभी सदस्यों को मान्य होगा
7. शोध-पत्र के प्रकाशन हेतु सम्पादक के नाम पत्र होना चाहिए, जिसमें स्पष्ट रूप से शोध-पत्र के सम्बन्ध में "मौलिक एवं अप्रकाशित" शब्द लिखा होना चाहिए और उसे अन्यत्र न भेजे जाने की पुष्टि हो। www.shodh.net से सर्टिफिकेशन ऑफ ओरिजिनलिटी प्राप्त करें या पृष्ठ127से लें और लेख के साथ भरकर भेजें।
8. शोध-पत्र में सारणी एवं चित्रों का प्रयोग लेख के बीच में न करते हुए अंत में संदर्भ या संलग्नक के रूप में करें।
9. शोध-पत्र ई-मेल द्वारा हमारे ई-मेल पते पर और डाक द्वारा निम्न पते पर भेजे जा सकते है। -

shodhsanchayan@gmail.com
info@shodh.net
डॉ० सुनीता सिंह, संपादक शोध संचयन,
409, शान्तिवन अपार्टमेंट
2A/244A आजाद नगर, कानपुर-208002 (उ०प्र०)

अपने आलेख को लिखते समय कृपया ध्यान दें:-
(शोध आलेख में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ)

1. आलेख में नई एवं मौलिक उद्‌भावनाओं/अवधरणा के प्रतिपादन का अभाव एवं पूर्व स्थापित अवधरणा/मान्यता, स्थापना आदि का पिष्टपेषण
2. शोध आलेख का तार्किक एवं श्रृंखलाबद्ध न होना और शब्दजाल की अनावश्यक उपस्थिति।
3. संदर्भ साहित्य का अपर्याप्त अध्ययन।
4. त्रुटिपूर्ण तथ्यों एवं आँकड़ों का उल्लेख
5. पाठ में उल्लिखित संदर्भ का लेख के अन्त में दी गयी संदर्भ सूची में न लिखा जाना
6. संदर्भ में पुस्तक के संस्करण का न लिखा जाना
7. पाठ में व्याकरणिक त्रुटियों का होना
9. वाक्य में काल का असंगत होना
10. प्रस्तुति में असंगतता
11. लेखक के द्वारा आलेख शुद्ध करते समय शब्द/पद/वाक्य का लोप हो जाना
12. लेख का अपेक्षाकृत बड़ा हो जाना
13. विषय प्रतिपादन में विषय का अस्पष्ट होना
14. तथ्यों, भावों या विचारों की पुनरावृत्ति

Abstract:-

The researchers must give Abstract of their papers/ Articles. It must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs given research papers.

शोध सारांश :-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख को आलेख सार (Research Article Abstract) अधिकतम 150 शब्दों में अवश्य दिया जाये। आलेख सार बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

Key Words :-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध पत्र/लेख के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले शब्दों को अवश्य दें। इनकी संख्या पाँच से अधिक नही होनी चाहिए।

Be Research Journalist

Be a Research Journalist and join us. Send research based News, information, reports and photographs of Seminars etc.

Research flourishes through publication & efficient academic networking.

PATRON :

Dr. Nagendra Swaroop, *D. Litt., Secretary, Board of Management, Dayanand Shiksha Sansthan, K npur*
Prof. Ram Achal Singh, *Ex. V.C., R.M.L.A. Univ., Faizabad, Ex. Chairman, UPHESC, Allahabad*
Prof. Narendra Kohali, *Eminent Hindi Writer, Delhi*
Prof. Achutanand Mishra, *Ex. V.C., M.L.C.Patakarita Vishwavidyalaya, Bhopal*
Prof. Gyanendra Singh, Ex.V.C., *M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*
Prof. K.B. Pandey, *V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana,Ex. Chairman, UPPSC, Allahabad, Ex. V.C.,C.S.J.M. Univ., Kanpur*
Prof. A.D.N. Bajpai, *Ex.V.C.,A.P.S. University, Rewa., Ex.V.C., M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakoot, Satana*
Dr. P.V.Shrikrishan Bhatt, *Ex. Principal & Member of Peear's Committee, NAAC, Banglore*
Sri. Suresh Chandra Shukla, *Editor,'Spial', Norway*
Sri. R.P. Goel, *Ex. Adv. Gen., U.P. Govt., Allahabad*

EDITORIAL ADVISORY BOARD :

Prof. Dasharath Dwivedi, *Ex. HOD, Sanskrit, D.D.U.G. University, Gorakhpur*
Prof. Surendra Dubey, *HOD, Hindi, D.D.U.G. University, Gorakhpur*
Prof. Sadanand Prasad Gupta, *Editor, 'Samanvaya', Gorakhpur*
Prof. Shanti Shri Pandit, *Dept. of Politics & Public Administration University of Pune, Pune*
Prof. R.C. Sinha, *Retd. Prof & Head, Dept. of Philosophy, Patna University, Patna*
Prof. Y.P. Singh, *Ex. HOD, Hindi. Alld. University, Allahabad*
Prof. N.N. Pandey, *Ex. Director, Kendriya Hindi Sansthan, Agara,Education, Assam Univ.Silture*
Prof. Rakesh Mishra, *Dept. of Buddhist Studies, University of Jammu, Jammu*
Prof. Geeta Sharma, *Lal Bahadur Shastri Administrative Academy, Mussoorie, Ex. Visiting Prof., Osak University, Japan*
Prof. Shushma Yadav, *Prof. of Ambedkar Chair, Indian Institute of Public Administration, New Delhi, Pro. V.C., IGNOU, New Delhi*
Prof. Bhagwiat Singh, *Ex. Principal, Hari Ram Degree College, Mairwa, Chapara*
Prof. Haribhakt Neopani, *Eminent Writer, Tribhuwan University, Kathmandoo, Nepal*
Dr. Ajai Prakash, *Ex. HOD, Hindi, D.A-V. College, Kanpur*
Prof. Nand Kishore Pandey, *Prof.,Dept. of Hindi, Rajasthan Univ., Jaipur*
Dr. Lalit Singh, *Dept. of Humanities, Registrar, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satana*

CHIEF EDITOR :
Dr. Yogendra Pratap Singh
Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur

EDITOR :
Dr. Sunita Singh
Dept. of M.Ed., V.S.S.D. College, Kanpur

NEWS EDITOR :
Dr. Ramesh Verma, *Senior Journalist, Dept. of Hindi, D.A-V. College, Kanpur*

EXECUTIVE EDITOR :
Dr. Tribhuwan Singh, *Principal, B.A.D. College, Ballia*
Dr. Bipin Chandra Kaushik, *Dept. of Pol. Science, D.B.S. College, Kanpur*

ABSTRACT EDITOR :
Dr. Raj Saran Shahi, *Dept. of Education, Budha P.G. College, Kushinagar*

ASSOCIATE EDITOR :
Dr. Pradeep Kumar Rao, *Principal, M.P. Degree College, Gorakhpur*
Dr. Amit Kumar Dwivedi, *Entrepreneurship Development Institute of India(EDII), Ghndi Nagar, Gujrat, Ex. Fellow, IIM, Ahmadabad*

HINDI LANGUAGE EDITOR :
Dr. Siddhartha Shankar, *Hindi, J.P.University, Chapara, Bihar*

ENGLISH LANGUAGE EDITOR :
Dr. Suman Singh, *Dept. of English, P.P.N. College, Kanpur*

TRANSLATION EDITOR :
Dr. Rajendra Prasad Pandey, *Dept. of Translation Studies, I.G.N.O.U., Dehli*

CONVENER & CO-CONV. REVIEW COMMITTEE :
Dr. Arun Kumar Singh, *Dept. of Philosphy, D.A-V. College, Kanpur*

COUNCIL OF EDITORS :

Dr. N.D. Dwivedi, *Dept. of Extension Education, M.J.P.R. Univ., Bareilly*
Dr. Ram Chandra, *Dept. of Hindi, J.N.U., Delhi*
Dr. A.K.Singh, *Head., Institute of J & M.C., C.S.J.M. Univ., Kanpur*
Dr. Ravi Shankar, *Dept. of Geography, B.H.U., Varanasi*
Dr. Kusum Singh, *Dept. of Humanities, M.G.C.G. Vishwavidyalaya, Chitrakot, Satna*
Dr. Jacob Kurion, *Professor of International Economics at the Johns Hopkins University Center for Advanced International Relations (SAIS) in Nanjing, China.*
Dr. Shamim Ahmad, *Department of Education, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad*
Dr. G.L.Srivastava, *Principal, Armapore Degree College, Kanpur*

Dr. **Jai Veer Singh,** *R.M.P.P.G., College, Sitapur*
Dr. **Pawan Agrawal,** *Dept. of Hindi, Lucknow Univ., Lucknow*
Dr. **Sanjay Singh,** *Department of History, K.N. Govt. P.G. College, Gyanpur, Bhadhohi*
Dr. **Niranjan Barnwal,** *Centre for South East Asian Language Study, California University, California, U.S.A.*
Dr. **K shi Nath Neopani,** *H.O.D., Budha Philosophy, Valmiki Campus, M.S.Viswavidyalaya, K thmandu, Nepal*
Dr. **Nityanand Srivastava,** *Dept. of Hindi,C.G.N.P.G. College, GolaGok ran, Lakhimpur*
Dr. **Krishna K nti Dixit,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*
Dr. **Aneeta,** *Dept. of P.G. Hindi, JP Uni. Chapara*
Dr. **Vibha Singh,** *Dept. of Hindi, D.A-V College, Kanpur*
Dr. **Mahesh Diwak r,** *President, Akhil Bhartiya Sahitya Kala Manch, Mooradabad*
Dr. **Gayatri Singh,** *HOD., Hindi, Armapore Degree College, Kanpur*
Dr. **N. Papa Rao,** *K.P.G. College, Bhilai, Durg, Chattisgarh*
Dr. **Ajai Bhupendra Jaiswal,** *Dept. of Law, V.S.S.D. College, Kanpur*
Dr. **Anoop Kumar Singh,** *Sociology, D.A-V., College, Kanpur*
Dr. **Raj Narayan Shukla,** *Dept. of Hindi, S.D.P.G. College, Ghziabad*
Dr. **Hardeep Singh Negi,** *H.O.D. Hindi, S.C.D. Govt. P.G. College, Ludhiyana*

ASISTANT EDITOR :

Dr. Raj Shree Chaturvedi
Dept of Pol. Science., D.A-V.College, Kanpur
Dr. Jyoti Yadav
Dept of English, K.M. Govt. College, Ghziabad
Vikash Mishra
Department of B.Ed., Akbarpur Degree College, Kanpur Dehat
Sarveswar Ram Mishra
Dept. of History, D.A-V. College, Kanpur
Vishakha Pandurang Mhaske
Lect., B.Ed. & M.Ed. College of Education, Shri Sharda Bhavan Education Society Nanded (Maharastra)

Publication Office-in-charge :
Suraj Singh, *New Delhi*

LEGAL CELL :

Manish Goyal, *Advocate, Allahabad*
Sanjai Singh Bisen, *Advocate, S.C., New Delhi*
K.K.Singh, *Advocate, H.C., Allahabad*
Ratneswar Pandey, *Advocate, H.C., New Delhi*

ACKNOWLEDGEMENT :

Dr. Rekha Sharma
Principal, D.A-V. College, Kanpur
Sri A. K. Yadav
Asst. Commisnor, Income Tax, New Delhi

सभी सम्पादकीय दायित्त्व पूर्णतः अवैतनिक है।

Special Issue
- विशेष अंक -

Indian Literature & Modern Discipline
भारतीय वाङ्मय और आधुनिक ज्ञानानुशासन

भारतीय वाङ्मय में आधुनिक ज्ञानानुशासनों के पर्याप्त प्रमाण मिलते है। अमरकोश आधुनिक थिसारस का पूर्वज है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र दुनिया का प्राचीनतम मीडिया का शास्त्र है। चाणक्य का अर्थशास्त्र राजनीतिविज्ञान का आधारभूत ग्रंथ है। .... आदि ऐसे अनेक प्रसंग है। जिनका संबंध आधुनिक ज्ञानानुशासन से है। आधुनिक संदर्भो में भारतीय वाङ्मय पर आधरित शोध आलेख आमंत्रित है।

Information Technology & Modern Discipline
सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक ज्ञानानुशासन

सम्प्रति सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। सूचना प्रौद्योगिकी और मीडिया की उपस्थिति से विश्व व्यवस्था में आमूल परिवर्तन घटित हुआ है। सूचना प्रौद्योगिकी ने न केवल व्यवस्था को बदला है वरन् विचार और दृष्टि को भी बदला है। इस नवीन क्राँति के हस्तक्षेप से शैक्षिक अनुशासनों में अभूतपूर्व बदलाव आए है। इस क्राँति से विभिन्न शैक्षिक अनुशासनों में आने वाले बदलावों को रेखा कित करने वाले सूचना प्रौद्योगिकी एवं विभिन्न विषयों के अन्तरानुशासनात्मक मौलिक शोध आलेख आमंत्रित हैं।

सम्पादकीय

शोध के प्रति जागरूकता व लगाव जरूरी

शोधकार्य व शोधपत्र के प्रकाशन का महत्व शैक्षिक जगत में लगातार बढ़ता जा रहा है। यद्यपि पूर्व में इनका महत्त्व किसी भी रूप में कम नहीं था, किन्तु उसका प्रत्यक्ष तत्काल लाभ कम से कम शिक्षक को न मिलने व इस कार्य के सन्दर्भ किसी प्रकार की अनिवार्यता के न होने से उनमें उसके प्रति किसी प्रकार की सत् संलग्नता का सर्वथा अभाव ही रहा।

भारतीय समाज में दी जाने वाली उच्च शिक्षा में तमाम प्रकार की पारम्परिक खामियों रही हैं। इनमें अच्छे ढंग से नियमितरूप से शोध कार्य का न होना एक आधारभूत खामी रही है। विज्ञान के कुछ विषयों को छोड़ दिया जाये तो अधिकतर दूसरे विषयों में विभिन्न विश्वविद्यालयों में नियमित तौर पर शोध करने की कोई पुष्ट अनिवार्य परम्परा नहीं रही है। इसका दुष्परिणाम यह रहा कि कई विषयों के महत्व को ही सन्देह की नजर से देखे जाने लगे। यद्यपि वे कभी भी कम महत्व के विषय नहीं रहे। आखिरकार विभिन्न विषयों में समय के साथ शोध के माध्यम से नये तथ्यों के शामिल न किये जाने पर उसकी प्रासंगिकता व उपादेयता का सन्देहपूर्ण होना बिल्कुल स्वाभाविक ही है। भारत जैसे देश में राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, भाषा सहित कला व मानविकी के तमाम अन्य विषय क्षेत्र में शोध के महत्व व आवश्यकता से कौन इंकार कर सकता है। इसी प्रकार, प्रबन्धन, वाणिज्य आदि विषयों में शोध किये जाने की काफी गुँजाइश व आवश्यकता है। एक प्रगतिशील समाज के लिए तो इसका महत्व और भी बढ़ जाता है ।

किन्तु जब हम भारतीय सन्दर्भ में उच्च शिक्षा में इन विषयों में किये गये शोध कार्य पर दृष्टि डालते हैं तो गहरी निराशा हाथ लगती है। इन सबका परिणाम यह रहा कि उच्च शिक्षा स्तर पर पढ़ाये जाने वाले तमाम विषयों में विविध प्रकार के सिद्धान्त व उदाहरण के लिए पश्चिम के ज्ञान पर हमारी निर्भरता लगातार बनी रही। कई सन्दर्भों में हम बेहद निरर्थक व अर्थहीन बातों को उच्च शिक्षा में सिर्फ इसलिए शामिल किये रहे क्योंकि उसके विकल्प के रूप में हमारे पास स्वयं अपना ज्ञान सुव्यवस्थित व पर्याप्त रूप में नहीं रहा है। यद्यपि ज्ञान देशकाल की परिधि में सिमट करके नहीं होता है फिर इसके तमाम ऐसे पक्ष हैं जो कि हमारे अपने होने चाहिए। किंतु ऐसा न होने के कारण इसके तमाम नकारात्मक पहलू भी पैदा हुए जो कि स्वयं अपने आप में शोध के विषय हैं। धीरे धीरे उच्च शिक्षा अर्थहीन व दिशाहीन होती चली गयी। यद्यपि आज भी स्थिति कोई बहुत सन्तोषजनक नहीं है।

विश्वविद्याालय अनुदान आयोग द्वारा इधर के वर्षो में शोध कार्य व शोध पेपर के महत्व को रेखाँकित करने व कुछ सन्दर्भो में अनिवार्य किये जाने के पश्चात इस क्षेत्र में विविध प्रकार की गतिविधियाँ बढ़ने लगी हैं। तमाम शोध पत्रों के प्रकाशन भी शुरू किये गये हैं। इसके बावजूद स्थिति अभी भी काफी सन्तोषजनक नहीं है। यहाँ पर यह बात ध्यान में रखने की है कि अभी भी अधिकतर सन्दभों में चल रहे शोध कार्यो को शोधार्थी एक बोझ के रूप में ले करके ही कार्य कर रहे हैं। इस कारण इनमें गुणवत्ता की काफी कमी दिखाई देती है। इसी प्रकार, शोध के क्षेत्र में उचित विषय की भी सही प्रकार से पहचान नहीं हो किये जाते है। अभी भी कुछ लोग शोध कार्य व शोध पत्र लेखन को किसी प्रकार ले दे करके पूरा कर लेने का कार्य समझने के साथ साथ इसी रूप में दूसरे को भी समझाते हुए दिखते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि शोधा के सन्दर्भ में अपनाये जाने वाले कार्य पद्धति व डिजाइन के बारे में शोधार्थियों का ज्ञान भी अधाकचरा है। शोध कार्य करने के दौरान अधिकतर शोधार्थी उचित शोध प्रक्रिया को नहीं अपनाते हैं। ऐसा न केवल अज्ञानतावश बल्कि शोध कार्य में लगाव व मेहनत की कमी के कारण होता है। अत: उसके प्रस्तुत किये जाने में आरम्भ से ले करके अन्त तक में किसी प्रकार का आकर्षण व उपयोगिता की झलक नहीं मिलती है। उसके प्रत्येक चरण की बनावट व प्रस्तुति अपने आप में बोझिलता लिए होती है। होना यह चाहिए कि शोधकर्त्ता अपने कार्य को इस प्रकार से स्वयं करे कि उसे शोध कार्य करने का भी आनन्द महसूस हो। जब तक एक शोधकर्त्ता के मन में यह भाव नहीं होगा, तब तक वह किसी भी विषय पर शोध कार्य करने के आनन्द को भी नहीं ले सकता है।

किसी भी प्रकार के शोध विषय लेने से पहले यह आवश्यक है कि शोधकर्त्ता की स्वयं उसमें रूचि हो और उसके महत्व के बारे में भी वह समझ रखता हो। शोध कार्य एक तरु विषय के शोधापूर्ण पक्ष को मजबूत करता हो, जिससे कि छात्रों व शैक्षिक जगत में नये ज्ञान प्रदान करने में सहायता मिले। वहीं दूसरी तरफ, वह समाज के लिए भी उपयोगी साबित हो। यही इस तथ्य को भी बताना उचित होगा कि शोधा कार्य बाजार की आवश्यकता को ध्यान में किया जाये तो उसका महत्व बढ़ जाता है।

आखिर घिसे पिटे अन्दाज में सन्दर्भ हीन बातें बता करके एक शिक्षक न केवल अपने महत्व को कम करता है वरन् शिक्षा के मूल उद्देश्यों को भी पूरा करने में असफल रहता है। परिणाम यह होता है कि कक्षा बेहद बोझिल व उबाउ हो जाती है। अत: शिक्षक में शोध के प्रति जागरूकता होना आवश्यक है। यह जागरूकता दोनों प्रकार से होनी चाहिए। अर्थात् एक तरफ वह ज्ञान की तलाश में शोध कार्य करके दूसरों को नवीन तथ्यों से अवगत कराये तथा साथ ही स्वयं में भी नये ज्ञान को सत् आत्मसात करने के लिए तैयार रहे।

शोध संचयन

Vol. 5, Issue 1, 15 Jan, 2014

अनुक्रम

पृष्ठ

लेखकों के लिए निर्देश ..... (III)

शोध के प्रति जागरूकता व लगाव जरूरी
सम्पादकीय ..... (VI)

Research Article

Present Trends of Newspapers in India (A qualitative study)
Dr. Arvind Kumar Singh
..... Page 16

A Study on Development Trends of Food Processing Sector in India
Dr. Anoop Kumar Singh
..... Page 29

A Study on Naipaul's Enigmatic Relationship with Reference to 'India: A Wounded Civilization'
Dr. Sneha Gupta
..... Page 37

Integrated Approach for Inculcating Human Values
Dr. Raj Sharan Shahi
..... Page 45

Academic Anxiety Among High School Students in Relation to Gender and Type of Family
Chaman Lal Banga
..... Page 55

शोधविमर्श

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय समाज विज्ञान की चुनौतियाँ
डॉ० बजरंग लाल गुप्ता
.....पृष्ठ 10

शोधआलेख

''आसमान झुक रहा है'' उपन्यास में कुमाऊँ के लोकविश्वास
डॉ० प्रभा पंत, घनाक्षी पांडे
.....पृष्ठ 23

उपभोक्ता सशक्तीकरण में सोशल मीडिया की भूमिका : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
विकास चन्द्र
.....पृष्ठ 34

'रामचरितमानस' में प्रयुक्त 'कथानक रूढ़ियाँ'
डॉ० राजश्री सी-आर
.....पृष्ठ 42

फिलीस्तीन समस्या पर भारत की संयुक्त राष्ट्र संघ में भूमिका
डॉ० एन०सी० मेहरोत्रा एवं विपिन कुमार मिश्रा
.....पृष्ठ 51

An Empirical Study of Life Insurance Consumers Beheviour in Uttar Pradesh
Dr. Harnam Singh
..... Page 64

मलिक मुहम्मद जायसी कृत 'अखरावट' में 'रहस्यवाद'
धर्मेन्द्र कुमार
.....पृष्ठ 71

महादेवी के रेखाचित्रों में समाज-चित्रण
डॉ. गीता कपिल
.....पृष्ठ 82

A Correlational Study of Consumer's Buying Behaviour
Dr. Smita Trivedi, Dr. Manish Kr, Verma & Dr. Sarita Misra
..... Page 85

झारखंड के हस्तशिल्प उद्योग में जनजातीय महिलाओं की भूमिका
डॉ० नम्रता गौरव
.....पृष्ठ 88

शिक्षक प्रशिक्षण में आधुनिक तकनीक के अनुप्रयोग एवं भावी सम्भावनायें
डॉ० सुनीता सिंह' एवं कुलदीप सिंह
.....पृष्ठ 92

मानसिक रूप से मन्द बुद्धि विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरुचि का अध्ययन
मधुरिमा तिवारी एवं डॉ० सरिता पाण्डेय''
.....पृष्ठ 95

मौलिकता का प्रमाण पत्र - प्रारूप ....पृष्ठ 103
सदस्यता प्रपत्र ....पृष्ठ 104

वैदिक युगीन 'विदथ' : एक समीक्षा
डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
.....पृष्ठ 60

तनावपूर्ण जीवन में कलाओं की भूमिका
डॉ० दीप्ति सक्सेना
.....पृष्ठ 68

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विज्ञान विषय में रुचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन
विकास मिश्रा' एवं डॉ० (श्रीमती) शोभा चतुर्वेदी''
.....पृष्ठ 76

शोध प्रबन्ध समीक्षा

फिल्मी पर्दा 'नायक' प्रधान, छोटा पर्दा, 'नायिका' प्रधान
- कौशल त्रिपाठी
.....पृष्ठ 97

शोध प्रकाशन समीक्षा

समाज में परिवर्तन इमानदारी से जीवन मूल्यों को अपनाकर ही लाजा जा सकता है।
डॉ० छाया बाजपेई
.....पृष्ठ 100

महाकवि कालिदास के नाटकों में पर्यावरण संचेतना
डॉ० ममता शर्मा
.....पृष्ठ 100

सृजन-संदर्भ समीक्षा

वैश्विक क्षितिज पर हिन्दी
डॉ० कृष्णकान्ति दीक्षित
.....पृष्ठ 101

हिन्दी मुक्तक की परंपरा में गीत के बाद हिन्दी गजल विधा को प्रतिष्ठित करने की रचनात्मक कोशिश
डॉ० राजेश तिवारी 'विरल'
.....पृष्ठ 102

An honest warning to research contributors

The writing of research papers is a very common phenomenon in the academic world. But now-a-days this is done without giving due care to the norms and ethics accepted for writing research papers. Even a small mistake spoils the reputation of the concerned person. We come across several stories of the violation of accepted norms. With the help of Electronic Editing, it is very common to cut ,copy and paste in Research article/ thesis formation without giving a reference of the original work. We should always keep in mind that it is not a fare practice. While reviewing, sometimes we come across such mallpractices. Such stories suggest that research scholars must be very honest and sincere in their work and must give proper attribution in case they quote any content from any original work.

Editor

Key-points which you have to keep in mind

Your research article is no doubt relevant and important. But we are need of your help.
Please review your article according to our specified format and send it.
There are certain key-points which you have to keep in mind-
*Article must have any research problem.
**Title of the research article should be focused on research problem.
*** Research Abstracts should be about presented research work in max.100 words.
**** Abstract:- Abstract of the paper/Articles must be concise, clear and perfect in itself and should not be the repetition of paragraphs from given research papers.

शोध सारांशः-

अनुसंधाता द्वारा अपने शोध पत्र/शोध आलेख का सारांश अधिकतम 100 शब्दों में दिया जाना अपेक्षित है। आलेख सार बनाते समय इस बात को ध्यान में रखा जाना अपेक्षित है कि वह अपने आप में संक्षिप्त, स्पष्ट एवं पूर्ण हो तथा मूल शोध आलेख के अनुच्छेदों की पुनरावृत्ति न हो।

* Approx. 5 keywords for online searching the article
Key Words:-

Keywords of research paper/article must be given at the beginning of the paper. It should not to be in more than 5 words.

विषय संकेत :-

शोध पत्र के विषय का सम्पूर्ण परिचय प्रस्तुत करने वाले कुछ शब्दों को अवश्य दें, जिससे आपके आलेख को इन्टरनेट पर सहजता से खोजा जा सके।

*References should be proper, relevant and abundant.
References must be in end-note style as given bellow-
Author's name, Book's name, Publisher, Place, Year, Page no.

Acknowledgement

It gives me immense pleasure to inform you that Centre of Indian Languages, School of Language, Literature & Cultural Studies, Jawaharlal University(JNU), New Delhi has ranked Shodh Sanchayan as a category "A" journal with maximum API score for both direct recruitment and promotions under CAS. These achievements have been gained due to your blessings and consistent co-operation to our efforts in making Shodh Sanchayan a quality journal.